वार्तालाप.440, आवडी (चेन्नई), ताः 14.11.07
Disc.CD No.440, dated 14.11.07 at Avadi (Chenni)

समय–0.02–1.58
जिज्ञासू – भक्तिमार्ग में शिव की आज्ञा के बगैर एक चींटी भी काट नहीं सकती।
बाबा –भक्तिमार्ग में कहते हैं कि परमात्मा के सत्ता के बिना पत्ता भी हिल नहीं सकता। खिले न कोई फूल ऐसे गायन करते हैं। अगर चींटी भी है चल रही है वो काटना चाहे तो काट नहीं सकती। माने परमात्मा बैठे–2 चींटी को कहता है कि तू काट, ऐसे समझ लिया है भक्तिमार्ग में लोगों ने; लेकिन ऐसे तो होता नहीं। क्या? वास्तव में उन्हें ये पता ही नहीं कि परमात्मा साकार शरीर में इस सृष्टि पर आता है और साकार शरीर में आकर के ऐसा संगठन बनाता है ब्राह्मणों का कि वो एक–2 बात पूछ–2 कर करते हैं। क्या? तब कहा जाता है कि – तेरी सत्ता के बिना पत्ता भी हिल नहीं सकता।....
Time: 0.02-1.58
Student: (It is believed that) in the path of worship even an ant cannot bite without the orders of Shiv.
Baba: In the path of worship it is said, 'without the power of the Supreme Soul, even a leaf cannot shake, nor can a flower blossom'. Even if it is an ant, if it is walking, if it wishes to bite, it cannot bite. It means that the Supreme Soul sits and asks the ant 'bite'. People think like this in the path of worship. But it does not happen like this. What? Actually, they do not know at all that the Supreme Soul comes in this world in a corporeal form and after coming in the corporeal body He establishes such a gathering of Brahmins that they perform every task after consultation (with God). What? Then it is said that – even a leaf cannot shake without your power.....

....पत्ता भी कोई पेड़ का पत्ता नहीं ये चैतन्य मनुष्य सृष्टि के जो पत्ते हैं वो बिना उसकी सत्ता के हिलते नहीं है; लेकिन कब की यादगार है? संगमयुग की यादगार। संगमयुग में भी ऐसा टाइम आएगा कि जब विश्व की राजधानी स्थापन होगी तो जो भी नई दुनियां में, नये वृक्ष में जो भी पत्ते होंगे चैतन्य वो बिना उसकी सत्ता के हिलेंगे भी नहीं। कोई उनको हिलाना चाहे, नहीं ऐसा नहीं करो, ऐसा करो; लेकिन वो मानने वाले नहीं है। आया समझ में? भक्तिमार्ग में जो भी कहावते हैं, जो भी मान्यतायें हैं वो सब किस समय की मान्यतायें हैं? संगमयुग की मान्यता है।
..... the leaf is not a leaf of any tree; it is the leaves of the living human world which do not shake without His power. But, it is a memorial of which time? It is a memorial of the Confluence Age. Such time would also come in the Confluence Age when the kingdom of the world would be established. Then, all the living leaves of the new world, the new tree would not even shake without His power. If someone tries to shake them (saying) "no, don't do like this, do like this," they are not going to accept that. Did you understand? All the proverbs, all the beliefs in the path of worship, they are the beliefs of which period? They are beliefs of the Confluence Age.

समय–0.45–05.03
जिज्ञासू – बाबा, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों को भक्तिमार्ग में पुरूष रूप में दिखाया है; लेकिन एक पुरूष और दो मातायें है ना। रूद्र माला में नारी से लक्ष्मी....
Time: 0.45-05.03
Student: Baba, Brahma, Vishnu, Shankar – all three have been shown in a male form in the path of worship, but (actually) one is male and two are mothers, are they not? In the *Rudramala*, a woman is transformed to Lakshmi.....

बाबा – त्रिमूर्ति में भक्तिमार्ग में तीनों मूर्तियों को पुरूष रूप में दिखाते हैं और ज्ञानमार्ग में दो माताओं के रूप ब्रह्मा और वैष्णवी देवी के रूप में और तीसरा पुरूष रूप में दिखाया है। तो भक्तिमार्ग में जो भी मार्ग चल रहा है वो चलाने वाले मोस्टली निवृत्तिमार्ग वाले हैं या प्रवृत्तिमार्ग वाले हैं? भक्तिमार्ग वाले जो चला रहे हैं, भक्तिमार्ग शास्त्र–वास्त्र लिखते हैं। शास्त्र दूसरों को सुनाते हैं भक्तिमार्ग के कर्मकांड में लोगों को रमाते हैं वो गुरूलोग निवृत्तिमार्ग के हैं मोस्टली या प्रवृत्तिमार्ग के हैं? निवृत्तिमार्ग के हैं। तो उन्होंने पुरूष ही पुरूष रख दिये हैं तीनों और शिवबाबा तो प्रवृत्तिमार्ग में आता है और प्रवृत्ति का ज्ञान सिखाता है। तो वहां मातायें दो कर दी और पुरूष एक कर दिया और वो अकेला पुरूष भी कुछ नहीं कर पाता। स्वर्ग के गेट कौन खोलती है? मातायें खोलती है।

Baba: In the path of worship, in (the picture of) Trimurty, all the three personalities are shown to be male forms and in the path of knowledge two (personalities) are shown in the form of mothers, i.e. Brahma and Vaishnavi Devi and the third one is shown in the form of a male. So, in the path of worship, whichever path is going on – do those who control these paths belong mostly to the path of renunciation or to the path of household? Do those gurus who belong to the path of worship, who write the scriptures of the path of worship, narrate the scriptures to others, delight people with the rituals of *bhaktimarg* , belong mostly to the path of renunciation or do they belong to the path of household? They belong to the path of renunciation. So, they have depicted all the three as just men but Shivbaba comes in the path of household and teaches the knowledge of household. So, two mothers have been shown there and one man has been shown and even that single man cannot do anything (on his own). Who opens the gateway to heaven? The mothers open.

समय–12.54–14.06

जिज्ञासू – बाबा, यमुना ऐसी क्या पवित्रता धारण करती है जो उसके कंठे पर ही स्वर्ग स्थापना होगा?

बाबा – हां! जो आदि करेगा सो ही अंत करेगा। एडवांस ज्ञान जब शुरू हुआ तो पहले–2 एडवांस ज्ञान में कदम किसने बढ़ाया? पहले–2 बीज किसने बोया? यमुना ने बोया। तो जो पहले–2 बीज बोते हैं उनका ज्यादा हिस्सा बन जाता है पैदाइश में, बाद में जो बीज बोते हैं उसका उतना हिस्सा नहीं बनता। कोई फसल हो शुरूवात में जो फसल बो दी जाती है उसमें ज्यादा पैदाइश होती है और जो पिछाड़ी में बोई जाती है उसमें उतनी पैदाइश नहीं होती है। ईश्वरीय ज्ञान का भी यही नियम है कि जिन आत्माओं ने दिल्ली में शुरूवात में सहयोग दिया वो भल अब कितनी भी विरोधी बन गई हो; लेकिन वो आत्मायें अंत तक सहयोग लेने की बाप से अधिकारी बनी रहेंगी; क्योंकि मौके पे उन्होंने हिम्मत करके सहयोग दिया।

Time: 12.54-14.06

Student: Baba, what kind of purity does (the soul representing) Yamuna inculcate that heaven will be established on her banks?

Baba: Yes, the one who makes the beginning will also bring the end. When the advanced knowledge started, who took the first step forward in the advanced knowledge? Who sowed the seed first of all? Yamuna sowed it. So, those who sow the seed first of all, are entitled to larger share of the yield; those who sow the seed later on, are not entitled to that much share. For example a crop; the crop that is sowed in the beginning (of a season) gives more yields and the crop that is sowed later on do not produce that much yield. The rule of the Godly knowledge is also the same, that those souls who extended cooperation in the beginning in Delhi, they may have become opponents to any extent now, but those souls will remain entitled to receive cooperation from the Father till the end because they garnered courage and extended cooperation (to the Father) when it mattered.

समय–18.46–19.15
जिज्ञासू – हम जन्म–जन्मांतर रामवाली आत्मा के साथ रहते आये हैं उसकी निशानी क्या होगी?
बाबा – उसकी निशानी ये होगी कि आटोमेटिकली याद आवेगी। कोई दूसरी आत्मा हमको प्रभावित नहीं कर सकेगी। अगर दूसरी आत्मा हमें प्रभावित करती है इससे क्या साबित होता है कि पूर्वजन्म में हम उनकी प्रजा बन कर के रहे हैं; इसलिये वो यहां भी प्रभावित कर रही है।
Time: 18.46-19.15
Student: We have been living with the soul of Ram for many births – what would be its indication?
Baba: Its indication would be that his thoughts would come to our mind automatically. No other soul will be able to influence us. If some other soul influences us then it proves that we have been his subject in the past birth; that is why he is influencing us even here.

समय–19.16–22.30
जिज्ञासू – प्रकाशमणि दादी शरीर छोड़ने के दो दिन पहले हैदराबाद, बॉम्बे में विस्फोट हुआ था। बॉम्बे में विस्फोट हुआ तो इसका कोई कनेक्शन होगा क्या?
बाबा –उन्होंने शरीर छोड़ने से पहले वो कोमा में पड़ी हुई थी। जो आत्मायें कोमा में चली जाती है कोमा में चली जाने से पहले वो इधर–उधर सूक्ष्म वतन में चारों तरफ भ्रमण करती है। क्या? शरीर (में) वो आत्मा नहीं होती है और सूक्ष्म शरीर जहाँ दूसरी जगह भ्रमण करेंगे तो वो कहीं भी प्रवेश करके कोई भी पार्ट बजा सकती है। हैदराबाद का तो फिर विशेष पार्ट है। हैदराबाद में कौन से धर्म की आत्मा ज्यादा रहती है? मुसलमान बहुत रहे पड़े हैं। तो जहाँ जिसका कार्यक्षेत्र होगा वही वो अपना प्रभाव डालेगी।.....
Time: 19.16-22.30
Student: Two days before Dadi Prakashmani left her body, explosions occurred in Hyderabad and Bombay. Explosion took place in Bombay. So, is there any connection (between Dadi's demise and the explosions)?
Baba: Before leaving her body she was lying in coma. The souls which go into coma, before going into coma, they keep wandering here and there, everywhere in the subtle world. What? That soul does not remain in the body and wherever it wanders, the subtle body can enter anywhere and play any part. And Hyderabad has a special part. Souls of which religion reside mostly in Hyderabad? There are more Muslims. So, one will influence the place wherever his field of activity is.

.....जैसे बम्बई वाली पहली पार्टी जब कम्पिल में भट्टी करने गई। पहली पार्टी गई तो बम्बई में बड़े–2 विस्फोट हो गये थे। पार्टी वहाँ भट्टी कर रही थी और वहाँ जोर–2 से विस्फोट हुए। तो हिसाब–किताब बना हुआ है और जैसे सन् 76 में गुजरात से जयप्रकाश नारायण का एजिटेशन निकला, क्रांति हुई और जनता पार्टी बनी और इंदिरा गांधी नीचे उतार दी गई। ऐसे ही एडवांस पार्टी में भी हुआ। क्या? एडवांस पार्टी में भी जयप्रकाश नारायण की आत्मा और एडवांस पार्टी में भी ये इमर्जेन्सी लगी उन ब्राह्मणों के लिये कि उनको अंदर न आने दिया जाए, घुसने न दिया जाए झगड़ा हो गया और मोरार्जी देसाई सहयोगी बन गए। ब्राह्मणों की दुनियां में कौन से मोरार्जी देसाई है? कृष्ण मोरार्जी देसाई वो एजिटेशन जो गुजरात से निकला और ये एजिटेशन भी गुजरात से निकला। तो दुनियां में जो कुछ भी होता है उसका अक्स ब्राह्मणों की दुनियां में भी है। ब्राह्मणों की दुनियां में जो कुछ भी होता है उसका अक्स बाहर दुनियां में भी पड़ता है। जुड़ा हुआ है।

.....For example, when the first party from Bombay went to attend bhatti at Kampil, when the first party (from Bombay) went there, big explosions took place in Bombay. There (i.e. in Kampil) the party was attending bhatti and there (i.e. in Bombay) big explosions took place. So, there is a karmic account. And just as the agitation of Jaiprakash Narayan began from Gujarat in 1976, revolution took place and Janata Party was formed and Indira Gandhi was dethroned. Similar thing happened in the Advance Party as well. What? In the Advance Party too, the soul of Jaiprakash Narayan; and this emergency was also imposed in the Advance Party for those Brahmins (i.e. the PBKs) that they should not be allowed to enter, they should not be allowed to intrude; a dispute emerged and Morarji Desai became a helper. Who is Morarji Desai in the world of Brahmins? Krishna Morarji Desai. That agitation began from Gujarat and this agitation also started from Gujarat. So, whatever happens in the world, a reflection of it is present in the world of Brahmins too. Whatever happens in the world of Brahmins will reflect on the outside world as well. They are connected (to each other).

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.